निस्केयर
NISCAIR

विज्ञान प्रगति

प्रमुख सम्पादक
दीक्षा बिष्ट

सम्पादक
बालक राम

प्रोडक्शन अधिकारी
सुप्रिया गुप्ता
एस. पी. सिंह

कला अधिकारी
नीरू विजन

कम्पोज़िंग
मीरा देवी

वरिष्ठ बिक्री एवं वितरण अधिकारी
लोकेश कुमार चोपड़ा

आवरण
नीरू विजन

रेलगाड़ी, रेलगाड़ी.... छुक-छुक, छुक-छुक बीच वाले स्टेशन बोले रुक-रुक.....ये गाना याद है आपको? या आपने बचपन में लाइन में एक के पीछे एक खड़े होकर रेलगाड़ी चलाई है। यकीनन, आज भी लाखों लोग ऐसे होंगे, जिन्होंने आज तक रेलगाड़ी नहीं देखी होगी। पर यह भी एक अटूट सत्य है कि एशिया में पहली रेलवे लाइन भारत में बनी। सन् 1853 में मुंबई से थाना के बीच लगभग 34 किमी. लम्बी पहली रेलवे लाइन बिछाई गई, जो 16 अप्रैल 1853 को खोली गई और उसके बाद तो देश में रेलवे लाइनों का जाल बिछने लगा। पर आजादी के बाद जो इस क्षेत्र में प्रगति हुई उसी का परिणाम है - सुपर फास्ट, शताब्दी, राजधानी और न जाने कितनी एक्सप्रेस जिन्होंने दिनों की यात्रा को घंटों में सिमटा दिया। सन् 1830 में दुनिया की पहली रेलवे लाइन ब्रिटेन में खोली गई। ब्रिटेन के ही जार्ज स्टीफेन्सन नामक व्यक्ति ने सन् 1825 में एक ऐसे भाप इंजन का आविष्कार किया था जो 20 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से 38 डिब्बों को खींच सकता था इसलिये रेल परिवहन के क्षेत्र में प्रारंभिक सफलता का श्रेय ब्रिटेन को जाता है।

भारत में भी रेलवे लाइन बिछाने का कार्य ब्रिटेन की रेल कम्पनियों ने किया, बाद में देश में रेल के क्षेत्र में विकास होने से देश में चहुंदिश विकास हुआ। रेल के विकास की गाथा इतनी बड़ी और प्रभावशाली है कि उसे देखने, सुनने, समझने के लिये हर कोई लालायित रहता है। संभवतः इसी बात को ध्यान में रखते हुए रेल संग्रहालयों की स्थापना की गई है। उपलब्ध सूचना के अनुसार भारत में 8 रेल संग्रहालय हैं : नेशनल रेल म्यूजियम, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली; मैसूर रेल म्यूजियम, मैसूर, कर्नाटक; जोशी म्यूजियम ऑफ मिनियेचर रेलवे, पुणे, महाराष्ट्र; रीजनल रेलवे म्यूजियम, चेन्नई, तमिलनाडु; घुम रेलवे म्यूजियम, घुम, पश्चिम बंगाल; ईस्टर्न रेलवे म्यूजियम, हावड़ा, कोलकाता, पश्चिम बंगाल; कानपुर रेलवे म्यूजियम, ओल्ड कानपुर, कानपुर, उत्तर प्रदेश जो रेल की गाथा की अद्भुत कहानी कहते प्रतीत होते हैं।

नई दिल्ली के चाणक्यपुरी में स्थित राष्ट्रीय रेल संग्रहालय भी रेल के विकास की अद्वितीय गाथा को दोहराता है। 1 फरवरी, 1977 में स्थापित यह संग्रहालय भारत की रेल धरोहर की कहानी कहता प्रतीत होता है।

यहां विश्व का सबसे पुराना भाप इंजन 'फेयरी क्वीन' भी है और अन्य आकर्षणों से युक्त इस संग्रहालय में रेलवे की धरोहर का अद्वितीय इतिहास समेटने का प्रयास किया गया है। बच्चों को रेल की सवारी का आनंद देने के लिए वहां छोटी ट्रेन भी हैं जिनमें बच्चे बैठकर रेल की सवारी का भरपूर आनंद लेते हैं।

नवम्बर अंक को **'बाल विशेषांक'** के रूप में प्रस्तुत करते हुए मुझे बड़ा हर्ष हो रहा है। इसी के माध्यम से बच्चों तक रेलवे के इतिहास की गाथा पहुंचाने का प्रयास, आशा है सफल रहेगा।

बाल विशेषांक आपको कैसा लगा, प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

विज्ञान प्रगति परिवार की ओर से दशहरे, दीपावली की मंगलकामनाओं सहित।

मूल्य

एक अंक	:	30.00 रुपये
एक वर्ष	:	300.00 रुपये
दो वर्ष	:	570.00 रुपये
तीन वर्ष	:	810.00 रुपये
विदेशी वार्षिक सदस्यता	:	65$
शिकायत	:	011-25841647
ई-मेल	:	lkc@niscair.res.in

सम्पादकीय	: 011-25841769, 011-25846301, 04-07/370
प्रोडक्शन	: 011-25847353, 25846301, 04-07/217, 337
विज्ञापन	: 011-25843359
बिक्री	: 011-25841647, 25846301, 04-07/286, 289
फैक्स	: 011-25847062
ई-मेल	: vp@niscair.res.in
वेब साइट	: http://www.niscair.res.in

© राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान
लेखकों के कथनों और मतों के लिये सी.एस.आई.आर. राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान, डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली - 110 012 उत्तरदायी नहीं है।
पत्रिका से संबंधित सभी विवाद दिल्ली न्यायालय द्वारा ही निपटाये जायेंगे।